# छोटानागपुर में पर्यटन के विकास एवं प्रभाव का ऐतिहासिक विश्लेषण (2000 से – 2021 तक)

**पीएच० डी० उपाधि हेतु**

**प्रस्तावित शोध प्रबंध का प्रारूप**

**इतिहास विभाग**

**(समाज विज्ञान संकाय)**

राँची विश्वविद्यालय, राँची ।

**शोध निदेशिका :**

**डॉ0 तिरियो एक्का,**

सहायक प्राध्यपिका,

इतिहास विभाग,

सिमडेगा महाविद्यालय, सिमडेगा

राँची विश्वविद्यालय, राँची ।

**शोधार्थी :**

**हनी कुमारी,**

यू0 जी0 सी0 नेट,

9110940482

# छोटानागपुर में पर्यटन विकास एवं प्रभाव का ऐतिहासिक विश्लेषण
# (2000 से – 2021 तक)

## 1 विषय का परिचय

वर्तमान में पर्यटन दुनिया के बड़े उद्योगों में से एक बनकर उभरा है जो न केवल पर्यटकों के लिए मनोरंजन व आनंद का साधन है बल्कि यह लाखों लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर किसी भी क्षेत्र के विकास में भी एक बड़ी भूमिका निभाता है। 'अतिथि देवो भवः' भारत की प्राचीन संस्कृति रही है। पर्यटन उद्योग भी इसी भावना का अनुसरण करता रहा है। भारत में पहली पर्यटन नीति 1982 में आयी लेकिन राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 के बाद पर्यटन को आर्थिक विकास के साधन के रूप में स्थापित करने के प्रयास हुए। इसी क्रम में 2003 में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा पर्यटन के विकास के लिए झारखण्ड के लिए 20 वर्षीय परिप्रेक्ष्य योजना तैयार की गई ।

झारखण्ड पर्यटन विभाग की टैगलाइन 'नेचर्स हिडन ज्वेल' अर्थात 'प्रकृति का छिपा रत्न' झारखण्ड की सुन्दरता की सही व्याख्या करता है। झारखण्ड का क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य, आरामदायक जलवायु और संस्कृति से समृद्ध है जो किसी पर्यटन के विकास के लिए उपयुक्त परिस्थितियां उत्पन्न करता है। विशेषकर छोटानागपुर प्रमंडल के पतरातू की हरियाली और घाटी, दशम, हूंडरू, गौतमधारा, पंचघाघ जैसे मनमोहक जलप्रपात और धुर्वा डिमना, मसानजोर, मैथन, तोपचाची जैसे स्थल प्राकृतिक पर्यटन के कारण प्रसिद्ध हैं। ऐतिहासिक–विरासत पर्यटन स्थलों के रूप में रातू का किला, बादम का किला तथा उलीहातू आदि प्रमुख हैं। ईंटखोरी मन्दिर,पहाड़ी मन्दिर, रजरप्पा, पारसनाथ और सूर्य मंदिर जैसे धार्मिक पर्यटन के लिए तथा रामकृष्ण मिशन विद्यापीठ, देवघर और रांची के योगदा मठ आध्यात्मिक पर्यटन स्थल के रूप में वर्ष भर देशी–विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करता है। झारखण्ड की पहचान लम्बे समय तक सिर्फ खान–खनिज के लिए थी लेकिन पिछले कुछ वर्षों में अपनी अंतर्निहित प्राकृतिक सुंदरता और जनजातीय संस्कृति की विशिष्टता के कारण राज्य की लोकप्रियता बढ़ी है। झारखण्ड राज्य में जहाँ वर्ष 2000 में आने वाले देशी पर्यटकों की संख्या 23,991 एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या

172 थी, वहीं वर्ष 2015 में आने वाले कुल देशी पर्यटकों की संख्या 3,31,79,530 तथा विदेशी पर्यटकों की संख्या 1,67,855 हो गई। झारखण्ड राज्य देश में देशी पर्यटकों की संख्या के हिसाब से 2009 में 15वें स्थान से वर्ष 2014 में 9वें स्थान पर पहुँच गया।

पर्यटन के विकास ने स्थानीय निवासियों के जीवन के विभिन्न आयामों पर स्पष्ट प्रभाव डाला है। झारखण्ड में अधिकांश लोग प्राथमिक व्यवसाय में लगे हुए हैं। कृषि के मौसमी एवं झारखण्ड के सूखाग्रस्त होने के कारण राज्य में पर्यटन उद्योग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के बहुत सारे अवसर प्रदान करता है। राजस्व कर, विदेशी मुद्रा, घरेलू और कुटीर उद्योगों तथा निर्यात में वृद्धि आदि सकारात्मक आर्थिक प्रभावों के अतिरिक्त जनसंख्या घनत्व का बढना, आय का असमान वितरण, कृषि भूमि का रूपांतरण, कृषि और पारंपरिक पेशे से पलायन तथा प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर अनियोजित वितरण बढ़ते पर्यटन के कुछ नकरात्मक प्रभाव हैं। पर्यटन से बुनियादी ढांचे में सुधार, चिकित्सा–शिक्षा की बेहतर पहुँच, लैंगिक समानता, जीवन स्तर में सुधार, विकास की निचले तबके तक पहुँच आदि सामाजिक परिवर्तन होते हैं। कई सांस्कृतिक पर्वो, स्थलों, कई विलुप्त होती परंपराओं, भाषाओं कला–कौशल और छऊ नृत्य और सोहराई कला को पर्यटन द्वारा जीवित रखा जा सका है। दूसरी ओर कृषि और पारंपरिक पेशे से पलायन, परंपराओं का व्यवसायीकरण, बाहरी संस्कृतियों के सम्पर्क से मूल संस्कृतियों का कमजोर होना, स्थानीय भाषाओं में परिवर्तन द्वारा पर्यटन विसंस्कृतिकरण की प्रवृति को बढ़ाता है। पर्यटन स्थानीय परंपराओं और प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव डाल सकता है, जिससे पर्यावरण असंतुलन में वृद्धि हो सकती है। पर्यटन सम्बन्धी पूर्व नीतियों सरकारी नीतियों के अध्ययन से छोटानागपुर क्षेत्र में प्रभाव को समझा जा सकता है। सतत विकास सुनिश्चित करने में सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है ताकि पर्यटन स्थलों का विकास इस प्रकार किया जा सके कि आर्थिक लाभ को अधिकतम हो तथा नकारत्मक प्रभावों को न्यूनतम किये जा सके।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में पर्यटन द्वारा झारखण्ड के छोटानागपुर प्रमंडल के प्रमुख जनजातीय व सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक–अध्यात्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, विरासत पर्यटन, तथा प्राकृतिक महत्व के पर्यटन स्थलों का सामाजिक–आर्थिक सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तन

एवं प्रभाव का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अध्ययन किया जाएगा। साथ ही पर्यटन विकास में सरकारी पर्यटन नीतियों ने विश्व के मानचित्र में झारखण्ड को आकर्षक पर्यटन स्थल के तौर पर स्थापित करने प्रयासों का विश्लेषण किया जाएगा।

**1.1 सहित्य समीक्षा**

बी० वीरोत्तम द्वारा लिखित पुस्तक ***'झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति'*** झारखण्ड के आरंभिक इतिहास, जनजातीय समाज, धर्म एवं संस्कृति को समझने के लिए बहुत उपयोगी है। झारखण्ड के भौगोलिक पृष्ठभूमि के साथ पर्यटन स्थलों की चर्चा है।

झारखण्ड के पर्यटन के क्षेत्र के इतिहास की जानकारी हेतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक 2003 में संजय कृष्ण द्वारा प्रकाशित ***'झारखण्ड के पर्व–त्योहार, मेले और पर्यटन स्थल'*** है। इस पुस्तक को मुख्यतः झारखण्ड के प्रमुख पर्यटन स्थलों की तथ्यात्मक जानकारी देने के उद्देश्य से लिखा गया है जो अल्पज्ञात थे। पुस्तक में झारखण्ड के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा पहुँचने के मार्ग आदि की भी विस्तृत चर्चा है।

एक अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक अभिनव नारायण द्वारा लिखित **'झारखण्ड द होम ऑफ मल्टी *डायमेंसनल टूरिज्म'*** है। साथ ही झारखण्ड के समृद्ध इतिहास की सांस्कृतिक झलक भी मिल जाती है। इसमें झारखण्ड के भौगोलिक पृष्ठभूमि के साथ ही पर्यटन के विभिन्न प्रकारों की चर्चा है। एक असीम संभावनाओं वाले पर्यटन स्थल के तौर पर झारखण्ड को इस पुस्तक में स्थापित किया गया है तथा इसमें पर्यटन के आर्थिक प्रभाव का भी आकलन किया गया है।

कमला प्रसाद और डॉ प्रसेनजीत सरकार की पुस्तक ***'टूरिज्म इन झारखण्ड'*** में पर्यटन को विश्व की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक शक्तियों में से एक बताया गया है। यह पुस्तक झारखण्डके छोटानागपुर पठार और संथाल परगना की अद्भुत प्राकृतिक सुन्दरता एवं वन्य जीवन की चर्चा करती है। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में झारखण्डमें पर्यटन की संभावनाओं, पर्यटन के विकास और पर्यटन की नीतियों का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है।

अन्य उपयोगी पुस्तक ***'झारखण्ड में पर्यटन एवं विकास'*** है जो एस० के० शर्मा और सरिता कुमारी द्वारा लिखित है। यह पुस्तक पर्यटन स्थलों तथा उसके समय के साथ विकसित

होते स्वरुप के अध्ययन के लिए उपयुक्त है। इसमें मुख्यतः पर्यटन उद्योग के आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक में झारखण्ड में पर्यटन के उद्योग के रूप में संभावनाओं की भी चर्चा की गई है।

### 1.2 शोध रिक्ति

उपरोक्त साहित्य के अवलोकन से हमें ज्ञात होता है कि ऐसे कई साहित्य हैं जो झारखण्ड के पर्यटन स्थलों की तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करते हैं। झारखण्ड पर्यटन विकास निगम की स्थापना के बाद से योजनागत तरीके से पर्यटन का विकास झारखण्ड में होना प्रारम्भ हुआ किन्तु पिछले दो दशकों में पर्यटन विकास ने छोटानागपुर प्रमंडल के विभिन्न जनजातियों और समुदायों की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विरासत जैसे– भाषा, खान–पान, नृत्य, संगीत, मेले पर्व –त्योहारों को संरक्षित करने के उद्देश्य से क्या कदम उठाये तथा इसका लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा। इसपर लेखन का अभाव है। इन साहित्यों में झारखण्डके विशेषकर छोटानागपुर प्रमंडल के जनजीवन तथा बढ़ते पर्यटन के अंतर्संबंधों के सूक्ष्म अध्ययन का अभाव है। कुछ साहित्यों में पर्यटन से होने वाले आर्थिक लाभों की चर्चा है लेकिन सभी समुदायों तक इस लाभ की पहुँच तथा समावेशी विकास में पर्यटन के योगदान की जानकारी सीमित है। छोटानागपुर में पर्यटन गतिविधियों के बढ़ने से पर्यावरण, स्थानीय भूमि एवम विभिन्न संसाधनों के उपयोग में आने वाले बदलावों का वर्णन नहीं मिलता है। पर्यटन उदयोग के विकास के वास्तविक सांस्कृतिक– सामाजिक आर्थिक एवं सरकारी नीतियों के प्रभाव को समझने के लिए इन अंतरालों की पूर्ति करने की आवश्यकता है।

### 1.3 शोध की समस्या

लम्बे समय तक बिहार का अंग बने रहने के कारण झारखण्ड की पर्यटन के क्षेत्र में संभावनाओं को पहचाना नहीं जा सका था। यद्यपि ब्रिटिश नेतरहाट को 'छोटानागपुर की रानी' तथा राँची को 'झारखण्ड का शिमला' कहते थे किंतु एक पर्यटन स्थल के रूप में झारखण्ड का विकास नहीं हुआ। राष्ट्रीय पर्यटन नीति 2002 के बाद पर्यटन को आर्थिक विकास के साधन के रूप में पहली बार पहचाना गया इसके पश्चात ही झारखण्ड में भी विभिन्न पर्यटन स्थलों

के विकास की योजना लायी गयी। छोटानागपुर में पर्यटन स्थल तथा पर्यटन उद्योग के विकास से सामाजिक –सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभावों के बदलते स्वरुप की जानकारी सीमित है। छोटानागपुर में पर्यटन उद्योग के विकास एवं प्रभावों का काल क्रमागत अध्ययन नहीं है। विशेषकर झारखण्ड के स्वतंत्र अस्तित्व के पश्चात आये कानूनों, झारखण्डसरकार की नीतियों, आधुनिकीकरण, शिक्षा, पलायन जैसे बदलावों के पर्यटन से सम्बन्ध के ऐतिहासिक अध्ययन का अभाव है। छोटानागपुर क्षेत्र में जनजातीय समुदायों और उनके पर्यावरण के बीच संतुलित सह–अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है। पर्यटन विभाग द्वारा प्रकाशित विभिन्न रिपोर्टों, मैगजीनों व ऑनलाइन पोर्टल के अध्ययन से पर्यटन उद्योग के बदलते स्वरुप तथा सरकार के दृष्टिकोण का पता चलता है किन्तु यह सूचनाएँ विश्लेषणात्मक न होकर तथ्यात्मक हैं। जिनमें स्थानीय–जनजातीय जीवन के आर्थिक और सामाजिक– सांस्कृतिक पक्ष की विस्तृत व्याख्याओं का अभाव है।

### 1.4 शोध का उद्देश्य

- प्रस्तुत शोध का उद्देश्य 2000 के बाद से छोटानागपुर में पर्यटन के ऐतिहासिक विकास, विस्तार और बदलाव को समझना है।
- शोध द्वारा पर्यटन उद्योग से क्षेत्र छोटानागपुर के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवेश में बदलाव लाने वाले कारकों का मूल्यांकन करना है।
- शोध से प्राप्त सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं एवं तथ्यों को एकत्रित कर इनका उपयोग छोटानागपुर लोगों के जीवन पर सकारात्मक एवं नकरात्मक पड़ने वाले प्रभावों का गहन अध्ययन करना है।
- शोध का उद्देश्य पर्यटन के विस्तार के साथ स्थानीय जनजीवन का भी विश्लेषण करना है कि पर्यावरणीय दृष्टिकोण से उनके लिए यह विकास न्यायसंगत है अथवा नहीं।
- शोध के द्वारा अलग राज्य निर्माण के बाद पर्यटन विकास सम्बन्धी सरकार की नीतियों के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा तथा पर्यटन योजना के रुझानों, चुनौतियों और अवसरों की पहचान करने में भी मदद मिल सकेगी।

### 1.5 शोध की परिकल्पना

1. अवसंरचनात्मक विकास द्वारा सामाजिक स्थिति में परिवर्तन लाने में पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

2. छोटानागपुर में पर्यटन उद्योग ने समावेशी एवं सतत आर्थिक विकास में योगदान दिया है।

3. पर्यटन विकास के कारण स्थानीय लोगों के मध्य अपनी संस्कृति एवं क्षेत्र के प्रति आत्मगौरव की भावना बढ़ी है।

4. पर्यटन स्थलों के व्यवसायीकरण से विसंस्कृतिकरण की प्रवृति को बढावा मिलता है।

5. पर्यटन के गैर–योजनागत विकास ने प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न किया है।

6. सरकारी पर्यटन नीतियों ने विश्व के मानचित्र में झारखण्ड को आकर्षक पर्यटन स्थल के तौर पर स्थापित करने, रोजगार सृजन और सतत विकास को भी बढ़ावा देने का प्रयत्न किया है।

## 2. शोध प्रारूप

### 2.1 शोध की विधि

प्रस्तुत शोध प्रबंध का कार्य पूर्णतः ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक विधि द्वारा संपन्न किया जाएगा। उपलब्ध साक्ष्यों का विश्लेषणात्मक वर्णन किया जाएगा। शोध सामग्री हेतु अभिलेखागारों तथा पर्यटन विभाग से संग्रहित सरकारी दस्तावेजों का संकलन किया जाएगा। केन्द्रीय तथा राजकीय पुस्तकालयों में संग्रहित द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया जाएगा। साथ ही समाचार पत्रों, प्रकाशित पत्रिकाओं एवं विवरण पुस्तिका का भी उपयोग किया जाएगा।

## 2.2. आंकड़ा संग्रहण हेतु उपकरण एवं तकनीक

सम्पूर्ण शोध में तथ्य संकलन स्रोतों के अध्ययन, अवलोकन, निरीक्षण एवं क्षेत्र भ्रमण के माध्यम से संपन्न होगी। क्षेत्रों का भ्रमण कर प्रश्नावली एवं साक्षात्कार विधि द्वारा तथ्य संकलित किया जाएगा। पर्यटन विकास से संबंधित ऐतिहासिक दस्तावेजों, रिपोर्टों, सरकारी प्रकाशनों, अकादमिक लेखों और तथा गैर सरकारी संगठनों की पत्र–पत्रिकाओं, जर्नल, रिपोर्ट एवं समाचार पत्रों से जानकारी एकत्रित की जाएगी। द्वितीयक स्रोतों के संकलन हेतु कंप्यूटर, इन्टरनेट एवं फोटोग्राफी जैसे आधुनिक माध्यमों की सहायता ली जाएगी। छोटानागपुर में पर्यटन उद्योग के विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पहलुओं के मूल्यांकन करने के लिए क्षेत्रीय दौरे किये जाएंगे। पर्यटन विभाग से जुड़े गणमान्य व्यक्ति एवं विद्वानों से साक्षात्कार लिया जाएगा। पर्यटन उद्योग में संलग्न व्यक्तियों, पर्यटकों, स्थानीय निवासियों का सर्वेक्षण कर वास्तविक जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

## 2.2. आंकड़ों का विश्लेषण

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु संग्रह किये गए विभिन्न प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों की तथ्यों एवं सूचनाओं का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विश्लेषण किया जाएगा। द्वितीयक स्रोतों के लेखकों के लेखन में पूर्वाग्रह एवं प्रमाणिकता की जाँच की जाएगी। इसके बाद आन्तरिक तथा बाह्य विश्लेषण करते हुए उपयोगी सूचनाओं को अलग किया जाएगा। इन सूचनाओं के सत्यता की जाँच की जाएगी। इसके साथ ही रिपोर्टों तथा योजनाओं से प्राप्त संख्यात्मक आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाएगा जिसका उपयोग विषय वस्तु की सामाजिक ,आर्थिक एवं सांस्कृतिक समझ को विकसित करने में किया जाएगा। अंततः हम विभिन्न दृष्टिकोणों और आंकड़ों का अध्ययन कर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अपने निष्कर्षों का संश्लेषण करेंगे।

## 3.शोध का महत्व

छोटानागपुर में पर्यटन उद्योग से बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश पर शोध बहुआयामी और महत्वपूर्ण है। वर्ष 2000 से 2021 तक छोटानागपुर में पर्यटन के बदलते स्वरुप के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में क्रमवार अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का उपयोग हम छोटानागपुर तथा

झारखण्ड के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों को समझने में कर सकते हैं। इस शोध द्वारा पर्यटन उद्योग के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों तथा परिवर्तनों पर प्रकाश डाला जा सकता है। विशेषकर यह शोध छोटानागपुर के जनजातीय समाज और अर्थव्यवस्था पर पर्यटन के विस्तार के दीर्घकालिक प्रभावों का व्यापक मूल्यांकन करने में उपयोगी हो सकता है। साथ ही वैश्विक पटल पर एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में झारखण्ड को विकसित करने में सहायता मिल सकती है।

**4.वर्तमान समय में विषय की प्रासंगिकता एवं आवश्यकता**

प्रस्तावित ऐतिहासिक विश्लेषण से छोटानागपुर में निवास करने वाली जनजातीय आबादी के विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों के बारे में प्रभावों की गहरी समझ विकसित की जा सकेगी। जिसका उपयोग वर्तमान में उचित एवं अधिक उपयोगी सरकारी नीतियों के निर्माण में किया जा सकता है। सामुदायिक विकास के लिए, स्थानीय बुनियादी ढांचे का विकास करने, सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देने या निवासियों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करने में सम्पूर्ण झारखण्ड के संदर्भ में इस ज्ञान का उपयोग संभव हो सकेगा।

**5.वर्तमान ज्ञान में योगदान**

झारखण्ड में पर्यटन उद्योग केवल आर्थिक गतिविधि का अंग नहीं है बल्कि इसमें सामुदायिक विकास का माध्यम बनने की असीम संभावना है। साथ ही प्रस्तुत शोध छोटानागपुर के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर बढ़ते पर्यटन के प्रभाव की जानकारी प्रदान करेगा। छोटानागपुर की अनूठी सांस्कृतिक विरासत तथा पर्यटन के मध्य सकारात्मक– नकारात्मक सम्बन्धों को निर्धारित करने में भी शोध सहायक होगा। प्रस्तावित ऐतिहासिक विश्लेषण पूर्व विद्यमान पर्यटन स्थलों के औद्योगिक पक्ष को सामने लाकर वर्तमान ज्ञान में योगदान देने की क्षमता रखता है।

**6.भविष्य कार्य**

प्रस्तुत शोध के माध्यम से भविष्य में सम्पूर्ण झारखण्ड में पर्यटन के विकास का क्रमवार ऐतिहासिक अध्ययन हो सकेगा। झारखण्ड राज्य के निर्माण के पश्चात छोटानागपुर के अलावा से प्रमंडलों में पर्यटन उद्योग से होने वाले परिवर्तनों पर कार्य किया जा सकेगा। शोध

के निष्कर्ष नीति निर्माताओं को पर्यटन विकास से जुड़े अवसरों और चुनौतियों को बेहतर समझने में सहायक होंगे। जिससे न केवल छोटानागपुर बल्कि सम्पूर्ण झारखण्ड में सतत एवं समावेशी विकास को सुनिश्चित करने के लिए रणनीति तैयार की जा सकेगी। साथ ही प्रस्तुत शोध कार्य से एकत्रित तथ्यों का उपयोग शैक्षणिक कार्यों में भी किया जा सकेगा।

**7.प्रस्तावित अध्याय**

भूमिका

प्रथम अध्याय– ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

द्वितीय अध्याय– आधारभूत संरचना का विकास एवं सामाजिक परिवर्तन

तृतीय अध्याय– आर्थिक एवं समावेशी विकास

चतुर्थ अध्याय– सांस्कृतिक विरासत एवं संरक्षण

पंचम अध्याय– सरकारी नीतियाँ एवं चुनौतियाँ

षष्टम अध्याय– जनजातीय आबादी तथा पर्यावरणीय प्रभाव का अन्तर्सम्बन्ध

उपसंहार

संदर्भ सूची

परिशिष्ट।

**संदर्भ सूची**

**प्राथमिक स्रोत–**

1. झारखण्ड का पर्यटन विभाग (2013) पर्यटन आगमन का डेटा
2. झारखण्ड पर्यटन नीति (2015) पर्यटन, कला, संस्कृति, खेल और युवा मामले विभाग, झारखण्डसरकार

3. झारखण्ड पर्यटन नीति (2021) पर्यटन, कला, संस्कृति, खेल और युवा मामले विभाग, झारखण्ड सरकार

4. झारखण्ड इकनोमिक सर्वे 2013–2014, एग्जीक्यूटिव समरी, डिपार्टमेंटऑफ फाइनेंस, गवर्नमेंट ऑफ झारखण्ड

5. टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी सेक्टर अचीवमेंट रिपोर्ट (2016) औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग, डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रियल पॉलिसी एंड प्रमोशन

6. पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, पर्यटन विभाग, (2003), प्रेपरेशन ऑफ 20 इयर प्रोस्पेक्टिव प्लान फॉर द स्टेट ऑफ झारखण्ड

7. मोमेंटम झारखण्ड(2017)

8. रिपोर्ट ऑफ द कम्पट्रोलर एंड ऑडिटर जनरल ऑफ इंडिया ऑन पब्लिक सर्विस अंडरटेकिंग (2015) गवर्नमेंट ऑफ इंडिया

**द्वितीयक स्रोत–**

1. अहमद, इ०, 1965, बिहार : ए फिजिकल इकोनॉमिक एंड रीजनल जियोग्राफी ,रांची विश्वविद्यालय ,रांची

2. केशरी, पी०, बी०, 2009, छोटानागपुरः कुछ सूत्र, कुछ संदर्भ, नागपुरी संस्थान, रांची

3. कृष्ण, संजय , 2003, झारखण्ड के पर्व–त्योहार, मेले और पर्यटन स्थल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

4. गुप्ता, एस०, पी०,महुवा भट्टाचार्य एंड कृष्णा लाल, 2003, कल्चरल टूरिज्म इन इंडिया : म्यूजियम्स मॉन्यूमेंट्स एंड आर्ट्स, डी के प्रिंट वर्ल्ड लिमिटेड नई दिल्ली

5. नारायण अभिनव,2017, झारखण्ड द होम ऑफ मल्टी डायमेंसनल टूरिज्म, राजेश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

6. प्रसाद, के० एंड पी० सरकार, 2014, टूरिज्म इन झारखण्ड, राजेश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

7. वर्मा उमेश कुमार, 2009, झारखण्ड का जनजातीय समाज, सुबोध ग्रंथमाला, राँची

8. विरोत्तम, बी०, 2001, झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी, पटना

9. सिंह सविन्द्र,1995,एनवायर्नमेंटल जियोग्राफी, प्रयाग पुस्तक भवन, उत्तर प्रदेश

10. शर्मा एस० के०,सरिता कुमारी, 2018, झारखण्ड में पर्यटन एवं विकास, राजेश पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली